

## Editorial

### भारत का बहुआयामी वैश्विक उदयः सभ्यता, संस्कृति और रणनीति की नई दिशाएँ

यह वर्तमान अंक ऐसे विद्वत् लेखों का संग्रह है, जो समकालीन वैश्विक व्यवस्था में भारत के एक सभ्यतागत, सांस्कृतिक और रणनीतिक शक्ति के रूप में बहुआयामी उदय को उजागर करते हैं। दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ भारत की भागीदारी पर आधारित शोध-पत्र यह प्रभावशाली ढंग से दर्शाता है कि इस क्षेत्र के साथ भारत के संबंध, जो सदियों पुराने सांस्कृतिक आदान-प्रदान, साझा मिथकों, समुद्री संपर्कों और भाषाई समानताओं में निहित हैं, अब एक ईस्ट नीति के तहत नए रणनीतिक महत्व प्राप्त कर रहे हैं। आर्थिक सहयोग, संपर्क, और सांस्कृतिक एकीकरण के अवसर अत्यंत व्यापक हैं, परंतु चीन के बढ़ते प्रभाव, भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा, और उभरते साइबर खतरों जैसी चुनौतियाँ भारत की क्षेत्रीय आकांक्षाओं की जटिलता को रेखांकित करती हैं।

इसी प्रकार, भारत-अफ्रीका सांस्कृतिक कूटनीति पर आधारित अध्ययन भी समान रूप से महत्वपूर्ण है, जो दोनों क्षेत्रों के बीच मौजूद गहरे ऐतिहासिक संबंधों को उजागर करता है। प्रवासी भारतीय समुदाय की विरासत, साझा धार्मिक प्रथाएँ, परस्पर जुड़ी कलात्मक परंपराएँ, मिश्रित व्यंजन संस्कृतियाँ, और सदियों पुरानी समुद्री संपर्कता के माध्यम से यह शोध यह रेखांकित करता है कि संस्कृति आज भी भारत की सबसे प्रभावी और स्थायी विदेश-नीति उपकरणों में से एक है।

इस अंक में भारत की वैश्वीकृत विश्व में स्थिति पर एक सूक्ष्म विश्लेषण भी सम्मिलित है। लेखक का मत है कि आज भारत की वैश्विक पहचान एक साथ उसकी प्राचीन

सभ्यतागत धरोहर, जैसे वैदिक ज्ञान, आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति, और दार्शनिक विरासत, तथा उसकी आधुनिक क्षमताओं, जैसे सूचना प्रौद्योगिकी, शिक्षा, डिजिटल नवाचार और विश्वव्यापी भारतीय प्रवासी नेटवर्क, से निर्मित होती है। अतः भारत का प्रभाव केवल आर्थिक नहीं है; यह बौद्धिक, सांस्कृतिक और नैतिक भी है, जो वैश्विक शासन, मानवाधिकार, कूटनीति और डिजिटल क्षेत्र तक व्यापक रूप से फैला हुआ है।

इस समकालीन विमर्श को और समृद्ध बनाता है बौद्ध धर्म और सॉफ्ट पावर पर आधारित शोध, जो भारत और चीन के बीच उभरती सांस्कृतिक प्रतिस्पर्धा पर एक महत्वपूर्ण दृष्टि प्रदान करता है। चीन जहां भव्य सांस्कृतिक स्थलों और अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से स्वयं को वैश्विक बौद्ध केंद्र के रूप में स्थापित करने का प्रयास कर रहा है, वहीं भारत, जो बौद्ध धर्म का जन्मस्थल है, अपने बौद्ध स्थलों और शैक्षणिक संस्थानों के पुनर्जीवन के माध्यम से एशिया में बौद्ध सॉफ्ट पावर का प्राकृतिक संरक्षक बनने की अद्वितीय स्थिति में है।

अंत में, यह संकलन रामायण में निहित राजनीतिक दर्शन के गहन अध्ययन से भी समृद्ध है। यह अध्ययन दर्शाता है कि राजधर्म, नैतिक नेतृत्व, न्याय और लोककल्याण पर आधारित प्राचीन भारतीय शासन-व्यवस्था आज भी राज्य-शिल्प की समकालीन अवधारणाओं को आकार दे रही है। रामायण में वर्णित धर्मसम्मत शासन, मंत्रियों की जवाबदेही, सामाजिक सद्व्यवहार, और नैतिक अधिकार के सिद्धांत आज के राजनीतिक परिवृश्य में भी अत्यंत प्रासंगिक हैं और आधुनिक शासन के लिए स्थायी सभ्यतागत अंतर्दृष्टियाँ प्रदान करते हैं।

समग्र रूप से, ये शोध-निबंध इस बात की पुष्टि करते हैं कि भारत की समकालीन वैश्विक उपस्थिति को केवल भू-राजनीतिक या आर्थिक दृष्टिकोण से नहीं समझा जा सकता। बल्कि, भारत का उभरता हुआ वैश्विक प्रभाव उसकी सभ्यतागत गहराई, सांस्कृतिक कूटनीति, सॉफ्ट-पावर संसाधनों, तकनीकी प्रगति और नैतिक दृष्टिकोणों के संतुलित मेल से निर्मित होता है। इस अंक के संपादक के रूप में, मेरा मानना है कि ये शोध-पत्र मिलकर इककीसवीं सदी की विश्व-व्यवस्था को आकार देने में भारत की विकसित होती भूमिका का समयोचित, ज्ञानवर्धक और बहुआयामी विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं।